'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १२९ } वाराणसी, मंगलवार, १० नवम्बर, १९५९ { पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

पूंछ (जम्मू-कश्मीर) १-७-'५९

एक-दूसरे का शोषण करके कबतक पोषण पाया जा सकेगा ?

आज एक बहन ने आकर हमसे कहा कि यहाँ नशाखोरी बहुत चलती है। इस शहर में घर-घर में जवान और लड़के-बच्चे भी नशाखोरी करते हैं। यहाँ तक कि यह एक धंधा-सा हो गया है। यह बड़े ही दुःख की बात है।

शराब से दिमाग बिगड़ता है

भाइयो, यह ऐसी चीज है कि जिससे धर्म भी बिगड़ता है, तन्दुरुस्ती भी बिगड़ती है और दिमाग भी बिगड़ता है। इस चीज का उपयोग करने के लिए सभी धर्मों ने मना किया है। इस्लाम ने किया है और हिंदू ने भी किया है। बावजूद इसके यह चल रही है।

मनुष्य को जब सूझता नहीं है, तब वह नशा करता है। जो देश नशे में फँसा है, वह कभी ऊपर नहीं उठ सकता। चीन में एक समय बहुत अफीम चलती थी। अब वह देश अफीम से बरी हुआ है। मगर वहाँ अब भी अफीमबाजी चलती रहती तो चीन तरक्की नहीं कर सकता था। कोई देश और कोई कौम नशेबाज होकर तरक्की नहीं कर सकती है। नशे-नशे में भी फर्क होता है। किसी नशे का ज्यादा परिणाम होता है और किसीका ज्यादा परिणाम नहीं होता है। शराब से दिमाग पर असर होता है। दिमाग खोया तो इन्सान गया-गुजरा हो जाता है। इन्सान की मुख्य चीज दिमाग होती है। सोचने के लिए दिमाग ठंडा रहना चाहिए। यह मानी हुई बात है। इसलिए सभी धर्मों में कहा है कि शराब नहीं पीनी चाहिए।

मैंने उस बहन से कहा कि यहाँ शांति-सेना खड़ी करनी चाहिए। फिर लोगों के पास जाकर समझाना चाहिए। घर-घर में जाकर लोगों को इकट्ठा करके समझाना चाहिए। खास करके इन अधिकारियों को इस बारे में सजग रहकर, चौकन्ना रहकर इसे खत्म करना चाहिए। यह काम अधिकारियों का है। लेकिन यहाँ शांति-सेना बनेगी तो इस काम को लाभ होगा।

बेकारों की जमात !

आज सुबह मैं सीज फायर लाइन देखने गया था। ७॥ मील जाना और ७॥ मील आना हुआ। कुल मिलकर १७ मील चलना हुआ। वहाँ मैंने देखा था कि इधर हिन्दुस्तान की फौज खड़ी है और उसके सामने ही उधर पाकिस्तान की फौज खड़ी है। कोई भी कौम तरक्की करती है तो वह अपनी हिम्मत पर ही करती है, लश्कर की हिम्मत पर नहीं। अगर लश्कर पर ही सारा दारोमदार रहा तो लोग बुजदिल बनेंगे, डरपोक बनेंगे। हिंदुस्तान की तवारीख में देखिये। पलासी की लड़ाई में हिंदुस्तान के नसीब का फैसला हुआ। चन्द घंटों में लड़ाई हुई और फैसला भी चंद घंटों में हुआ। उस लड़ाई में क्लाइव की फौज जीती और दूसरी फौज हारी। इतने में कुल बंगाल क्लाइव के कब्जे में आ गया। बंगाल क्या था ? ५ करोड़ लोगों का प्रदेश ! एक मैदान में ही वह अंग्रेजों के हाथ में चला गया। बड़ी ताज्जुब की बात है। क्या बंगाल मनुष्यों का था या जानवरों का ? अगर वहाँ ५ करोड़ भेड़ें होतीं तो ऐसा होता, यह ठीक था। लेकिन लश्कर पर सारा दारोमदार होने से ऐसी हालत हुई। आज भी लश्कर पर ही सारा दारोमदार है। जब तक ऐसी हालत रहेगी, तब तक लोगों की ताकत नहीं बढ़ेगी। लोगों की जिस्मानी और रूहानी दोनों ताकतें बढ़नी चाहिए। जिस्म अच्छा रहा, तो रूहानी ताकत बढ़ेगी। जिस्म बीमारी से भरा हो, तो वह ताकत नहीं बढ़ेगी। दोनों साथ-साथ बढ़ती हैं। मैं कह यह रहा था कि अगर लश्कर पर दारोमदार रहा और अपनी ताकत पर न रहा तो हम बचनेवाले नहीं हैं। अब साइन्स का जमाना आ रहा है। शस्त्रास्त्र बढ़ रहे हैं। लेकिन लोगों की हिम्मत नहीं बढ़ रही है। लश्कर खड़ा है, उसके सहारे हम यहाँ हैं। यह हमारी कमजोरी है। इससे हम मजबूत बननेवाले नहीं हैं।

इसलिए हमारा कहना है कि इस वक्त शांति-सेना की सख्त जरूरत है। इस कस्बे में शांति-सेना जरूर खड़ी होनी चाहिए। ये सिपाही बेकार होते हैं, वैसे शांति-सैनिक बेकार नहीं होंगे। ये सिपाही इसलिए हैं कि कहीं हमला हो जाय तो रक्षण करें, हिफाजत करें। इसलिए उन्हें चौकन्ना रहना पड़ता है। लेकिन शांति-सैनिक रोज सेवा का काम करेगा।

सेवक चाहिए

यह 'पूँछ' याने 'पहुँच' है। यह 'पहुँच' की 'जगह' है। यह से

www.vinoba.in

कुल दुनिया में हमारी ताकत पहुँच सकती है। इस शहर में १५, २० हजार की आबादी होगी। यहाँ तीन ऐसे सेवक चाहिए, जो हर घर में जाकर बराबर जानकारी प्राप्त करें। उनसे पहचान करें। मौके पर सबके पास मदद के लिए पहुँचें। सेवा का काम सतत करते रहें। ऐसे सेवकों की भी फिर एक बड़ी जमात होनी चाहिए। मैंने बहनों से कहा है कि आप लोग ऐसी जमात बनाइये, जो रोज २, ३ घंटा सेवा में दे। कहीं कोई बीमार हो तो उसके पास पहुँचना, ताकि उन तीन मनुष्यों को भी काम में मदद हो जाय। गाँव के हर मनुष्य के साथ परिचय रखें। पहचान रखें। हर घर के नाम जान लें। याद रखें। प्यार बढ़ायें। ऐसे सेवकों की फौज यहाँ खड़ी होनी चाहिए, जो हर घर से वाकफियत रखेगी। ताल्लुक रखेगी। ऐसे सेवकों का जब्त रहेगा। कहीं कोई फसाद हुआ तो इनकी हाजिरी से ही दंगा शांत होगा। अगर ऐसा न हुआ तो यह सेवक वहाँ जायँगे, मार खायँगे, मर मिटने के लिए तैयार होंगे। यह फौज के सिपाही भी मर-मिटने के लिए तैयार रहते हैं। उनके हाथ में शस्त्र रहता है। लेकिन सिपाही सामनेवालों को मारते भी हैं। शांति-सैनिक कभी किसीको नहीं मारेगा।

बहनों का उत्तरदायित्व

अभी भी बहुत सारी बहनें गुलामी में हैं। वे क्या करेंगी? हम चाहते हैं कि बहनों की ताकत बनें। इस आनेवाले जमाने में बहनों को मौका मिलनेवाला है। उनकी ताकत बननेवाली है। यह आप देखेंगे। दुनिया के मसले शान्ति से, अमन से हल हो सकें, उतना अच्छा है। इसके आगे शांति और अमन की बात करनी चाहिए। अभी तक बहनें बच्चों को सँभालती थीं, घर का काम करती थीं। पति को मदद करती थी, बीमारी में उसकी और बच्चों की सेवा करती थी। यह ठीक है। यह सब अहम काम है। लेकिन इतने से बहनों का काम पूरा नहीं होता है। भाइयों ने जो बुरे काम किये हैं, उन्हें रोकने का काम बहनों को करना चाहिए। समाज को आगे लाने का काम उनका है। इन भाइयों ने २५ सालों में दो बहुत बड़े जंग छेड़े। तीसरे की तैयारी हो रही है। इसलिए अब बहनों को आगे आना चाहिए। समाज की गलत बातें सुधारनी चाहिए। यह जिम्मेवारी उनकी है। इसके आगे दुनिया में बहनों का काबू रहेगा, जब्त रहेगा। आज तक मर्दों ने रोब जमाया था। वह सारा फेंककर उनको आगे आना चाहिए। जब तक शस्त्रों पर दारोमदार था, बहनों को महफूज रखने का काम था, उनकी रक्षा का एक बड़ा काम था। लेकिन अब इसके आगे शस्त्रों पर दारोमदार रहनेवाला नहीं है। अब इसके आगे रूहानी ताकत से मसले हल होंगे, तब यह काम होगा। बड़े-बड़े जनरल, यह महसूस करते हैं, लेकिन उन्हें मजबूरी से काम करना पड़ता है। अब इसके आगे जैसे शस्त्र का हमला होता है, वैसे ही शान्ति का हमला करना चाहिए, शांति की ताकत बढ़ानी चाहिए। शांति याने घर में बैठना, पत्थर नहीं फेंकना, इतना ही नहीं, बल्कि शांति हमेशा कायम रहेगी, ऐसी फिजा तैयार करना। जहाँ दंगा-फसाद हो, वहाँ शांति पैदा करने का काम तो है ही। लेकिन उसके पहले ही वैसी फिजा, शांति की फिजा कायम रखने में मदद करना, यही काम होगा। यह चीज बननी चाहिए। इसके लिए दुनिया तैयार हो रही है।

डर का कारण सियासत

अब रूहानी ताकत के दिन आये हैं। जहाँ रूहानी ताकत के दिन आये, वहाँ बहनों का काम आता है। उनके लिए मैदान खुलता है। उनको आगे आना चाहिए। बहनों को मदद करने के लिए भाइयों को भी आगे आना चाहिए।

बहनों के लिए हमने एक काम शुरू किया है—सर्वोदय-पात्र। सर्वोदय के दिन आये हैं। सर्वोदय में अपने हाथ में हुकूमत लेने की बात नहीं है। लेकिन हुकूमत को कहे में रखें, उसपर असर डालें, ऐसी बात है। इसलिए सर्वोदय को रोज वोट देने के लिए पात्र में बच्चे के हाथ से एक मुट्ठी अनाज रोज डालना है। अशान्ति के काम में हिस्सा नहीं लेंगे, शान्ति की फिजा रखने मे मदद करेंगे, यूँ तय करके सर्वोदय-पात्र हर घर रखा जायगा। मौका आया तो शान्ति-सैनिक मर मिटेंगे। उनका समाज पर जब्त रहेगा। इस तरह शांति की ताकत पैदा होगी। लोगों में, अवाम में यह हिम्मत होनी चाहिए कि हम लश्कर पर अपना दारोमदार नहीं रखेंगे। अपने पाँव पर खड़े होंगे। पाकिस्तान की अवाम को भी यह हिम्मत करनी चाहिए। मैं जानता हूँ, हिन्दुस्तान का किसान और पाकिस्तान का किसान—दोनों में प्यार है। द्वेष, मत्सर नहीं है। कहीं भी अवाम में द्वेष, मत्सर नहीं। अमेरिका रूस, इंगलैण्ड, चीन—सब जगह अवाम में प्यार है। लेकिन डर छाया है और यह डर सियासत के कारण छाया है। यह डर खत्म होगा—अगर जगह-जगह शान्तिसेना खड़ी होगी। कभी भी पुलिस की जरूरत शांति के लिए नहीं रहेगी। अवाम निर्भय, निडर होकर रहेगी। यह बनेगा तो मुल्क की, देश की अन्दरूनी ताकत बढ़ेगी। सिर्फ फौजी ताकत से देश की तरक्की नहीं होती है।

बहनें क्या करें?

बहनों को इस काम में जरूर आना चाहिए। इसके लिए उन्हें सत्संग करना चाहिए और खास करके पराई निन्दा करने से बचना चाहिए। समाज में जो हवस, हसद, गुस्सा गरूर है, वह खतरनाक है। उससे बचना चाहिए। किसी भी कौम की तरक्की उनसे नहीं होती है। कौम-कौम के बीच जो हसद चलती है, झगड़े चलते हैं। वह दोनों कौमों को खत्म करते हैं। इसलिए हसद, निन्दा नहीं करनी चाहिए। एक-दूसरे की खामियाँ हमेशा नहीं देखनी चाहिए। जैसे हाथ पर फोड़ा हुआ तो हम उसे हिफाजत से बड़ी फिक्र रखकर धीरे-धीरे ठीक करने की कोशिश करते हैं, जबरदस्ती नहीं करते हैं। वैसे किसीकी खामी नजर आयी तो प्यार से उसे तनहा में ले जाकर बताना चाहिए। जाहिरा तौर पर उसकी निन्दा नहीं करनी चाहिए। यह परहेज सबको रखना चाहिए।

जमीन की मिलकियत मिटाने का, गाँव-गाँव में प्यार से रहने का काम सर्वोदय का काम है। हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव में बहनें सर्वोदय-पात्र का, शान्ति का, खादी का काम करें। शराबखोरी, नशाखोरी बन्द करने का काम करें। बच्चों को मुहब्बत, हिम्मत, निडरता—ये गुण पाने की तालीम दें। उनको मारें नहीं, पीटें नहीं। मारने-पीटने से बच्चे डरपोक बनते हैं और अपने जिस्म को ही वह रूह समझते हैं और फिर जो भी मारे, डराये—उसके वश में हो जाते हैं। इसलिए बच्चों पर प्यार करना चाहिए। उनको हिम्मत सिखानी चाहिए। यह सिखाना चाहिए कि कोई उन्हें डराये, मारे, पीटे या धमकाये तो उसकी बात हर्गिज मत मानो। तभी वे निडर बनेंगे।

एक-दूसरे को चूस रहे हैं?

यहाँ सिवाय खेती के और कोई धंधा नहीं है। लोग कहते हैं

कि अब यहाँ सरकार धंधे खड़े करनेवाली है। सरकार! सरकार! सरकार! अल्लामियाँ का नाम उतना नहीं लेते हैं, जितना सरकार का नाम लेते हैं! सरकार का नाम लिये बगैर एक लफ्ज भी नहीं बोल सकते? उसीपर सारा दारोमदार है। हमें कुछ करना चाहिए, यह खयाल नहीं है। हमही को रोजगारी ढूँढ़नी चाहिए। गाँव का कपड़ा गाँव में बनाना चाहिए। कपास बोने से लेकर कताई, धुनाई, बुनाई, रंगाई—सब काम गाँव में हों तो सबको काम मिलेगा और बच्चों को भी सिलाई का धंधा मिलेगा। गांधीजी ने बहुत चिल्ला-चिल्लाकर खादी के बारे में कहा था, लेकिन उस बात को ३०, ४० साल हो आये हैं, पर अभी तक खादी गाँव-गाँव में नहीं पहुँच पायी है। जमीन की मिलकियत गाँव की होनी चाहिए। फसल बढ़ेगी, यह ठीक है, लेकिन और कोई धंधा न हो तो लोग बेकार बनेंगे। इसलिए निश्चय करना चाहिए कि हम खादी पहनेंगे। बहनें कातेंगी। आज दूसरे को खत्म करके हम जी रहे हैं। गाँवों को खत्म करके, वहाँके धंधे खत्म करके शहर जाना चाहते हैं। जानवरों को चूसकर इन्सान जीना चाहता है। बहनों को चूसकर भाई जीना चाहते हैं। सिलाई की मशीन चलाने का बहनों का रोजगार भाइयों ने छीन लिया है। बहनों के हाथ में रोजगार नहीं रहा है। खाविंद मर गया तो बच्चों को लेकर बहन क्या करेगी? हुनर उसके पास भी रहना चाहिए कि नहीं? एक जमाना था, जब बहन बुनने का काम करती थी। लेकिन वह भी काम छीना गया है। रसोई का काम भी बहनों के हाथों से भाई छीन ले, इसी बात का डर है। लोग रोजमर्रा होटल में खाना खायेंगे तो होटलों की संख्या बढ़ेगी और रसोई का काम भी बहनों से छिन जायगा।

इसलिए हमें समझना चाहिए कि गाँव-गाँव में गाँव-गाँव के काम महफूज होने चाहिए। रिजर्व रहने चाहिए। गाँव-गाँव के धंधे छीने जायँगे तो गाँवों का हमला शहरों पर होगा। दोनों का उसमें नुकसान होगा। मैं तो मानता हूँ कि बच्चों को पढ़ाई, कताई, सिलाई—यह छोटे-छोटे काम बहनों के हाथ में होने चाहिए। इससे वे खुद अपने पाँव पर खड़ी होकर जिन्दगी बसर कर सकेंगी। सिर्फ अपने खाविंद पर दारोमदार नहीं रखेंगी।

सरकारी दारोमदार!

आप कब तक सरकार पर दारोमदार रखेंगे? आप खुद यहाँ धन्धे खड़े कीजिये। खादी आयेगी तो गाँव की आधी रोजगारी बढ़ेगी। इन दिनों इतना महीन कपड़ा निकला है कि मैं हैरान रह जाता हूँ। बारीक कपड़ा फटता भी जल्दी है। इससे ज्यादा कपड़ा लगता है। बेवकूफ लोग समझते नहीं हैं कि ऐसा कपड़ा इस्तेमाल करने से देश की ज्यादा जमीन कपास में जायगी और गल्ला कम होगा। यह सोचने की बात है।

एक दफा चर्चा चल रही थी कि देश में कितना कपड़ा हो! तो उसमें यह निकला कि सालभर में हर मनुष्य के लिए ३० गज कपड़ा चाहिए। मुझसे गांधीजी ने पूछा कि 'क्या ३० गज कपड़ा चरखा तैयार करेगा?' मैंने कहा, आप दिल्लीवालों से यह पूछिये कि आपको छह महीना चलनेवाला कपड़ा चाहिए कि एक साल चलनेवाला? बारीक कपड़ा ज्यादा चलेगा नहीं, ६ महीने में फट जायगा। मोटा कपड़ा बहुत दिनों तक चलेगा। आप तय कीजिये कि आपको महीन कपड़ा चाहिए कि मोटा? महीन पहनने से कपास के लिए ज्यादा जमीन जायेगी और गल्ला कम होगा और मोटा पहनने से तो गल्ला ज्यादा पैदा होगा। इस तरह सोचकर जो समाज तय करेगा, वह मजबूत बनेगा, टिकेगा। नहीं तो सरकार के नाम का जप करने से कुछ नहीं होगा।

कुछ लोग कहते थे कि सरकारी फज्ल से यहाँ सड़कें बन रही हैं। सरकार का उपकार है कि १॥, १॥। रुपया रोज मजदूरी मिलती है। लेकिन एक दफा सड़क बन गयी तो फिर क्या होगा? जवान-जवान लोग खेती छोड़कर रास्ते बनाने के काम में लग जायँगे। फिर फसल नहीं बढ़ेगी। रास्ते बनाना, यह कोई कायमी धंधा नहीं है। क्या जब तक इन्सान कायम रहेगा, तब तक यह धंधा कायम रहेगा।

मेरी आपसे यह अपील है कि आप यह फैसला कीजिये कि गाँव-गाँव में हम धंधे खड़े करेंगे। हम गाँव का ही माल इस्तेमाल करेंगे। बाहर के कपड़े पर और दूसरी चीजों पर बायकॉट करेंगे। गाँव का ही कपड़ा पहनेंगे तो गाँव का स्वराज्य बनेगा। तभी गाँव टिकेंगे और तभी देश टिकेगा। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

बगनोटी (जम्मू) १९-६-'५९

दूध पीजिये! नशा छोड़िये!! नीयत ठीक रखिये!!!

आज इस गाँव के लोगों के सामने हमारे भाइयों ने ग्रामदान की बातें रखीं। उन्होंने कहा कि हम सोच रहे हैं। सोचकर ही ग्रामदान के बारे में तय करेंगे। यह अच्छी बात है। सब बातें सोचकर ही तय करनी होती हैं। घर के सभी भाई, बहनों को सोचना चाहिए।

मुश्किलें मिटाने की तरकीब

आप लोगों को यहाँ भागकर आना पड़ा। आते ही कुछ दिन तो आपके आफत में, मुश्किल में बीते। फिर यहाँ आपको जमीन मिली। जो आफतें आयीं, वे अब याददाश्त हो गयी हैं। इस समय दिन-ब-दिन आबादी बढ़ रही है। आबादी के हिसाब से जमीन तो बढ़नेवाली है ही। इस हालत में चंद लोगों के हाथ में जमीन रहेगी तो कैसे होगा? यह ठीक है कि यहाँ सबको जमीन मिली है। लेकिन जम्मू और कश्मीर में जमीन ही कम है और यहाँकी सरकार ने सीलिंग भी किया है। फिर भी जमीन का मसला तो रहेगा ही। अभी आपको और फिर आपके बच्चों को भी जरूरत रहेगी, इसलिए अभी आपका तो ठीक चल रहा है। लेकिन आगे आपके बेटों को मुश्किल होगी। आज कुछ एक्स-सोल्जर्स भी हमसे मिलने आये थे। उनको १०, १५ रुपये पेन्शन मिलती है। उनके पास जमीन भी नहीं है। जमीन मुजारों को मिली है। ऐसे कई मसले हैं। और भी कई ऐसी मुश्किलें पेश आयेंगी। आपकी आज की और आनेवाली सभी मुश्किलों को ध्यान में रखकर हमने एक तजवीज सुझायी है। वह यहाँ माकूल है और वह यह है कि आप जमीन की शख्सी मिलकियत छोड़ें, शामिलात मिलकियत रखें और बख्शीराज या नेहरूराज न रखकर गाँव में ग्रामराज बनायें। इधर गाँव का राज और उधर अल्लाह का राज हो। इसके बीच में नेहरू और बख्शी मददगार हो सकते हैं। एक-दूसरे की जोड़नेवाली कड़ी हो सकते हैं। यह तबतक नहीं होगा, जबतक

सबको जमीन नहीं मिलेगी, दस्तकारी नहीं मिलेगी, और गाँव का जिम्मा गाँववाले ही नहीं उठायेंगे।

माखन खाते जाना, सूत कात हरषाना

आज जुलाहे, बुनकर मिलने आये थे। हमने उनके घर जाने का वादा किया था। उनके हाथों में बुनने का फन है। उन्होंने कहा कि हमारा बुनने का उद्योग चलना चाहिए। हमने कहा, आपको रोजी मिलनी चाहिए, बुनने का काम मिलना चाहिए। यह तब मिल सकता है, जब कि उनको यहाँ काता हुआ सूत मिले। गाँव का कपड़ा गाँव में बनना चाहिए और गाँव में ही उसका इस्तेमाल होना चाहिए। गाँव में गाय है तो दूध, मक्खन आपको खाना चाहिए, बच्चों को खिलाना चाहिए। दूध, मक्खन बेचने की चीज नहीं है। बच्चों को ऐसी चीजें खाने को मिलेंगी तो बच्चे मजबूत बनेंगे। अच्छे सिपाही, अच्छे कारकून बनेंगे। दूध, मक्खन खाने को न मिला तो वे कमजोर बनेंगे। बैल कमजोर होंगे तो किसान का नुकसान होगा। फसल कम होगी। लेकिन बच्चे कमजोर बनेंगे तो देश ही कमजोर बनेगा। इसलिए हमें मक्खन खाना चाहिए, बच्चों को खिलाना चाहिए। फिर हम गायेंगे 'माखन खाते जाना, सूत कात हरषाना'। आज बच्चे सूखी रोटी खाते हैं। कभी-कभी रोटी के साथ दाल, मिरची भी मिल जाती है। यह ठीक नहीं है, इन्हें खूब घी-दूध मिलना चाहिए। ये (नानकचन्द मेहता) हमारे पिताजी हैं। इनकी उम्र ९२ साल है। इतनी उम्र होते हुए भी तगड़े हैं, काम करते हैं। इनसे हमने पूछा कि आपके जिस्म में इतनी ताकत कहाँसे आयी? इन्होंने बताया: (१) मैं दूध पीता हूँ। (२) नशाखोरी नहीं करता हूँ और (३) मेरी नीयत अच्छी है। ये तीन चीजें हम जिन्दगी में लायें तो हमारी जिन्दगी लम्बी होगी। भगवान ने हमारे लिए जो जिन्दगी रखी है, वह हम पूरी जीयेंगे।

गाँव का ग्रामदान करें, एक कुनबा बनायें, रोजमर्रा की चीजें गाँव में ही तैयार कर लें तो हमारी जिन्दगी में सुख आयेगा। फिर पाकिस्तान से और लोग अगर यहाँ आयेंगे तो उन्हें भी कहेंगे कि तुम भी हमारे ग्रामदान में शामिल हो जाओ। अगर हम ग्रामदान का रास्ता लें तो इस तरह से आगे आनेवाली मुसीबतें भी हल हो सकती हैं। आज बाहर से कपड़ा वगैरह खरीदते हैं। वह अच्छा लगता है। लेकिन उसीके कारण बच्चों को मक्खन नहीं मिलता है। जमीन सबके लिए और काम भी सबके लिए है, ऐसा होना चाहिए। तालीम, इल्म मिलना चाहिए और काम करने की शोहरत भी होनी चाहिए। इसके लिए ग्रामदान के सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

इन्सान कायम के लिए अच्छा है

आज एक बूढ़े मुसलमान भाई हमसे मिले। उन्होंने हमारे सामने सिर झुकाया और लगे रोने। वे बहुत रोये। उनका एक बेटा मर गया और दूसरा पाकिस्तान में रह गया। ऐसे सारे किस्से सुनकर हमारा दिल भी रोने लगता है। हमने कैसी फिजा बनायी है। किसीके बेटे छूट गये, किसीके भाई। जब मुल्क के दो हिस्से हुए थे, तब काफी झगड़े थे। लड़कियाँ इधर से उधर और उधर से इधर भगायी गयी थीं। हिन्दू, सिख, मुसलमान—सबने उस वक्त खराब काम किये थे। खराब हवा आयी थी। अब वह हवा नहीं रही है। यह परमात्मा की कृपा है। खराब हवा आती है और जाती है। वह कायम नहीं रहती है। इन्सान कायम के लिए अच्छा ही है। वे बूढ़े भाई हमसे पूछ रहे थे कि क्या हमारे बेटे से हम मिल सकते हैं? हमने कहा, आप वहाँ जा सकते हैं। असल में वहाँ जाने में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए। अपने इस देश की दस हजार साल की तवारीख है। उतने में सैकड़ों राजा, महाराजा और बादशाह आये, गये। पर यह कश्मीर कायम है। जैसे ये नदियाँ झेलम, चिनाब, सिन्धु आदि और ये पहाड़ कायम हैं और लोग भी जैसे के तैसे कायम हैं। कायम की चीजें परमात्मा की, खुदा की हैं। जो चीजें कायम नहीं रहतीं, वे फानी हैं। यह दुनिया फानी है। फना होनेवाली है। इस फना होनेवाली दुनिया में 'यह मेरा बेटा है और यह पराया है,' ऐसा भेद करके नहीं देखना चाहिए। हम सभी खुदा की, परमात्मा की सन्तान हैं, इस तरह से देखेंगे तो सबपर बराबर प्यार रहेगा। हमेशा भगवान को याद करें, झूठ न बोलें, सचाई पर चलें, ईमान रखें। अपने लिए अलग-अलग न सोचें। मेरा मैं देखूँगा—यह खयाल न रखें। हम सब अपना मिलकर सोचें, मिलकर देखें, मिलकर काम करें। कोई चीज मेरी नहीं, सभी हमारी हैं। इस तरह 'मेरा' छोड़ें और 'हमारा' सोचें।

हम छोटे व्यापारी हैं

हम तो आपके खिदमतगार हैं। यहाँ आपको भगवान का पैगाम सुनाने आये हैं। सभी जगह यह पैगाम पहुँचाने के लिए ही हम पैदल-पैदल घूम रहे हैं। हमारा कौल 'जय-जगत्' है। हम सारे जगत् की जय चाहते हैं। आज तो लोग चाहते हैं कि हमारी फतह हो और हमारे दुश्मन की हार हो। दो पक्षों में लड़ाई होती है। तो दोनों ओर की फौजें अल्लामियाँ से यह दुआ माँगती हैं: "हमारी फतह हो"—एक की हार में दूसरे की जीत है। लेकिन हम सबकी जीत चाहते हैं। मेरी जय, तेरी जय, उनकी जय, सबकी जय हो, सबकी फतह हो। सबकी फतह में किसीकी भी हार नहीं है। परमात्मा हमें यही नसीहत देता है और यही नसीहत हमें नबी, पैगम्बर और सन्तों ने दी है। यह नसीहत पुरानी है। इसी नसीहत को पहुँचाने हम आपके पास आये हैं। जैसे छोटे व्यापारी बड़े व्यापारी से माल लेते हैं और बेचते हैं, वैसे ही बड़े-बड़े महान् नबी, रसूल, साधु और सन्तों के पास जो माल पड़ा है, वही लेकर हम गाँव-गाँव में आपके पास पहुँचाते हैं। ◆◆◆

अनुक्रम

१. एक-दूसरे का शोषण करके कब तक पोषण...
पूँछ १ जुलाई '५९ पृष्ठ ७६३
२. दूध पीजिये! नशा छोड़िये!! नीयत ठीक रखिये!!!
बगनोटी १९ जून ५९ ,, ७६५

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन: १३९१ तार: 'सर्व-सेवा' वाराणसी